ORIGINAL ARTICLE ISSN:- 2231-5063

Golden Research Thoughts

जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन

सारांश :

अध्ययन का उद्देश्य जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन करना था। अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर स्वामी जी के उपदेशों एवं वचनों पर आधारित ग्रन्थों को प्रमुख आधार बनाया गया। अध्ययन हेतु ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप मे जैन दर्शन का शिक्षा–दर्शन किसी बाल– विशेष, वर्ग–विशेष के लिये न होकर सार्वकालिका, सार्वदेशिक हैं। अर्थात जैन दर्शन का शिक्षा–दर्शन सब को पुरूषार्थ और आत्मनिर्भता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि तुमने दुसरो के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हे विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा । दुसरे शब्दो मे जैन शिक्षा–दर्शन मे, शिक्षा का स्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रशासन एवं अनुशासन मानवाधिकार एवं विश्व शान्ति शिक्षा को सही आधार प्रदान कर सकता है।

पवन सारस्वत[1] , पी.एस. त्यागी[2]

[1]शोधार्थी , दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा.
[2]एसोसिएट प्रोफेसर , दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा.

पवन सारस्वत

शोधार्थी , दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा.

प्रस्तावनाः—

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में उन समन्वित गुणों का विकास करना है जिनके द्वारा वह स्वयं प्रसन्न रह सके और समाज के विकास में अपनी क्षमता के अनुसार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। शिक्षा ही मानव को सही अर्थों में मानव कहलाने योग्य बनाती है। शिक्षा संकुचित अर्थ में एक व्यवस्था है, किन्तु उसका फल व्यापक अर्थों में विद्या है इसलिए भारतीय विचारकों ने विद्या को मोक्षदायिनी और अविद्या को समस्त दुःखों का कारण स्वीकार किया है। विद्या या ज्ञान मोक्ष का साधन ही नहीं वरन् स्वयं मुक्तावस्था है, यदि सही अर्थ में शिक्षा की इस अवधारणा को ग्रहण करके उस को व्यवहार में लाने का प्रयास किया गया होता और शिक्षा की व्यवस्था इसके अनुरूप की गई होती तो व्यक्ति और समाज की यह दुर्गति न होती जैसी कि आज देखने को मिल रही है। सारा विश्व स्वार्थपरता, परस्पर विद्वेष और घृणा के भाव से आहत हैं। हमने विश्वशान्ति एवं मानव मूल्यों को तिलांजलि दे दी है। स्वार्थपूर्ति के लिए दूसरे का सर्वनाश करने में किसी हद तक जाने को तैयार हैं। अपने आदर्शो एवं मूल्यों को भूलकर सारा विश्व शान्ति एवं मानवाधिकार के हनन के लिए तत्पर आज जिस गति से मानव जैसे जीवन प्राणी की मूल्यों से आस्था समाप्त हो रही है, उससे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कुछ ही वर्षों में मानव का मूल्यों एवं शान्ति से विश्वास उठ जाएगा तो समाज में शान्ति एवं संस्कृति की स्थिति क्या होगी? आज भौतिक संसाधनों को जुटाने में अन्दर की मानवीयता कुंठित हो रही है। मानव दिखावा कर गौरवान्वित हो रहा है। विषयभोगी मानव में अहंकारिता अहमवादिता व स्वार्थपरता छा गई है। मानव मन भ्रमित है। सामाजिक जीवन की समरसता का भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा है। ऐसी स्थिति में सुखद एवं शान्तिमय भविष्य को सुनिश्चित करने हेतु अतीत की नीतिगत कथाओं का अध्ययन करना अपरिहार्य है, जिसमें शिक्षा द्वारा नैतिक निर्णय क्षमता एवं विश्वशान्ति के प्रति प्रतिबद्धता का विकास तथा संस्कृति विहीनता, अमानवीयता एवं अलगाव से मानव जीवन के संरक्षण को बल मिले।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय प्रगति हुई है, परन्तु क्या इस प्रगति का लाभ समाज के विभिन्न वर्गों को मिला है? क्या अनुसूचित जाति, जनजाति पिछड़े वर्ग एवं महिला वर्ग का उत्थान हुआ है? क्या शिक्षा वर्तमान मे सामाजिक समरसता ला सकी है? ये सभी प्रश्न आज सुरसा की तरह मुँह फैलाए हर विचारक, सुधारक एवं शिक्षाविद् के सामने खड़े हैं। मानव का विभिन्न स्तरों पर शोषण मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति पर कुठाराधात है। अतः आज परिस्थिति के अनुकूल सुरक्षा की आवश्यकता है। एतदर्थ भारतीय दर्शन में जैन दर्शन के सिद्धान्तों का अनुसरण करना समीचीन प्रतीत होता है। यही शिक्षा मूलतः मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति जैसे बिन्दुओं के उद्गम स्थल है। इसी कारण शोधार्थी ने आज के इन ज्वलंत मुद्दों के समाधान हेतु जैन दर्शन का चयन किया है। विश्वशान्ति एवं मानवाधिकार सुरक्षा दोनो विषय आज के विश्व पटल पर समस्या बने हुए हैं। आज इन बिन्दुओं पर शोध किया जाना समीचीन प्रतीत होता है।

समस्या कथनः—

शोधकर्त्ता द्वारा अपने शोधकार्य हेतु ''जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन'' विषय चुना गया।

अध्ययन के उद्देश्य :—

1.जैन दर्शन के शैक्षिक स्वरूप की विवेचना करना।
2.मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना की विवेचना करना।
3.जैन दर्शन की शिक्षा में निहित मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा के तत्त्वों का परिगणन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण करना।
4.जैन दर्शन की शिक्षा में निहित मानव अधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता का विवेचन करना।

अध्ययन के स्त्रोत :—

प्रस्तुत शोधाध्ययन के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर स्वामी जी के उपदेशों एवं वचनों पर आधारित ग्रन्थों को प्रमुख आधार बनाया गया है किन्तु भगवान महावीर स्वामी जी ने उपदेश ही दिया, उन्होने कोई ग्रन्थ नहीं रचा। इसी कारण वे निग्रन्थ कहे जाते हैं। बाद में उनके प्रमुख शिष्यों ने उनके उपदेशों और वचनों का संग्रह कर लिया। इनका मूल साहित्य प्राकृत में है। विशेष रूप से मगधी, पाली एवं अपभ्रंश में होने के कारण सर्व सेवा संघ–प्रकाशन राजघाट, वाराणसी द्वारा प्रकाशित एवं जिनेन्द्रवर्णी (2007) द्वारा संपादित समणसुत्तं को प्रमुख आधार एवं स्त्रोत सामग्री के रूप में चयनित किया गया है।

अध्ययन विधिः—

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शैक्षिक अनुसंधान की दार्शनिक ऐतिहासिक शोध विधि को अपनाया गया है।

शोध अध्ययन प्रक्रिया :—

प्रस्तुत अध्ययन कर प्रक्रिया को चार चरणों में विभक्त किया गया है :—

1.जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा सम्बन्धित गाथाओं एवं श्लोकों का चयन

2.जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा सम्बन्धित गाथाओं एवं श्लोकों का वर्गीकरण
3.वर्गीकृत गाथाओं एवं श्लोकों का विश्लेषण एवं विवेचन
4.जैन दर्शन में निहित मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा सम्बन्धी गाथाओं एवं श्लोकों में निहित तत्त्वों का शैक्षिक निहितार्थ निर्धारण

शोध अध्ययन की उपलब्धियाँ :–

शोधार्थी ने अवलोकन एवं अध्ययन द्वारा यह पाया है कि वर्तमान भारतीय समाज संघर्ष के संकटकालीन दौर से गुजर रहा है। जैन दर्शन ऐसी ही संकटकालीन स्थितियों से मानव मात्र को उबारने के लिये एक उपदेष्टा के रूप में प्रकट होती है।

मानवाधिकार एवं जैन दर्शनः–

मानवाधिकार का वर्णन जैन दर्शन के ग्रन्थ समणसुत्तं में प्रथम खण्ड के उन्तालीसवें श्लोक से आरम्भ हो जाता है। सम्पूर्ण समणसुत्तं में मानवाधिकार के प्रति मानव मूल्य, अहतां और शोषण का विरोध किया गया है। जैन धर्म के सिद्धान्त मानवाधिकार व मानव जीवन के आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए वे संजीवनी का कार्य कर सकते हैं, व शर्त की हम उनका उचित ढंग से पालन करें।

महावीर संदेश आभा से परिपूर्ण है तथा आत्मविश्वास आत्मानुशासन एवं आत्म विशुद्धि द्वारा आत्मा की आंतरिक शक्तियों एवं असीम संभावनाओं को उजागर करने के साधन हैं। इनको पालन करने से ही मानवाधिकार हनन पर स्वतः रोक लगेगी।

विश्वशान्ति शिक्षा एवं जैन दर्शनः–

अपरिग्रह का मार्ग विश्वशान्ति का प्रशस्त मार्ग है। इसके फलस्वरूप मानव को व्यवहारिक एवं सामाजिक जीवन में सफलता और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। साथ ही साथ अहिंसा और जीवदया की भावना भी सामने आती है। जैन दर्शन का प्रत्येक सिद्धान्त, प्रत्येक वाक्य प्राणी हित की बात करता है। समणसुत्तं के प्रथम खण्ड में एक सौ इक्यावन (151) के श्लोक में व्यक्त किया है।

''परस्परोपग्रहो जीवानाम्'' अर्थात जीवन एक दूसरे के सहयोग पर एक दूसरे के उपकार भाव पर निर्भर है। यहाँ ''जीओ और जीने दो'' की भावना तथा क्षमा की भावना विद्यमान है। यही सह–अस्तित्त्व है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैन दर्शन सबको पुरूषार्थ और आत्मनिर्भरता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि यदि तुमने दूसरों के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हें विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा। अतः जैन दर्शन के अनुसार बालक को शिक्षा के माध्यम से सदाचारता, संयम, तप, स्वाध्याय, सदाचरण, अहिंसा सत्य, त्याग, शान्ति, अस्तेय आदि गुणों के विकास की ओर उन्मुख करना चाहिये। विश्वशान्ति शिक्षा एवं मानवाधिकार के सन्दर्भ में इस आत्मनिर्भरता की शिक्षा का प्रचार होना आवश्यक भी है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया :–

शिक्षण आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, इस अर्थ में बालक तथा उसके वातावरण के मध्य निरूतर अन्तःक्रिया चलती रहती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत मुख्यतः तीन बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं –

- शिक्षा का पाठ्यक्रम
- शिक्षण विधि

शिक्षा का पाठ्यक्रम :–

जैन दर्शन के पाठ्यक्रम में वनस्पति, शारीरिक संरचना इतिहास, सामाजिक परिवर्तन, भौतिक परिवर्तन आदि का समावेश किया गया है।

शिक्षण विधिः–

जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षण विधियों में (1) निसर्ग विधि, (2) अधिगम विधि, (3) निक्षेप विधि, (4) प्रमाण विधि, (5) नयविधि, (6) स्वाध्याय विधि, (7) प्रश्नोत्तर विधि, (8) पाठ विधि, (9) श्रवण विधि, (10) पद विधि, (11) पदार्थ विधि, (12) उपक्रम विधि, (13) व्याख्या विधि, (14) शास्त्रार्थ विधि, (15) प्ररूपणा विधि, (16) कथा, रूपक, तुलना एवं उदाहरण विधि तथा (17) संगोष्ठी विधि प्रमुख हैं।

प्रशासन तथा अनुशासन :–

शिक्षा का अर्थ, स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ इत्यादि निर्धारित कर लेने के पश्चात शिक्षा व्यवस्था

का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष सम्पूर्ण शिक्षा योजना को कार्य रूप में परिणत करने की योजना है। इस उपशीर्षक पर विचार किया जाना अनिवार्य है।

- गुरू शिष्य सम्बन्ध
- अनुशासन का स्वरूप

गुरू शिष्य सम्बन्ध :–

गुरू एवं शिष्य के सुमधुर सम्बन्ध एक–दूसरे के विकास के साथ ज्ञान को भी विकसित करने में सहायक होते हैं। जैन दर्शन में विनय और गुरू भक्ति पर बल दिया गया है।

अनुशासन का स्वरूप :–

अनुशासन के दृष्टिकोण से जैन दर्शन मे कठोर रूख अपनाया हुआ हैं। इस दर्शन मे अनुशसन के कठोर प्रारूप का प्रवाधान हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप मे कहा जाता है कि जैन दर्शन का शिक्षा–दर्शन किसी बाल– विशेष वर्ग–विशेष के लिये न होकर सार्वकालिका, सार्वदेशिक हैं। अर्थात जैन दर्शन का शिक्षा–दर्शन सब को पुरूषार्थ और आत्मनिर्भता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि तुमने दुसरो के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हे विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा । दुसरे शब्दो मे जैन शिक्षा–दर्शन मे, शिक्षा का स्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रशासन एवं अनुशासन मानवाधिकार एवं विश्व शान्ति शिक्षा को सही आधार प्रदान कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.बेस्ट, जे. डब्ल्यू (1963), रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली।
2.बुच, एम. बी., ए. फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशन रिसर्च (1983), बडौदा।
3.बेस्ट, जे. डब्ल्यू (1988), रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली विले ईस्टर्न प्रा. लि.।
4.डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, भारतीय दर्शन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली (1989)।
5.मिश्र, डॉ. करूणा शंकर, मूल्य शिक्षण (1991) विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।
6.ओड़, एल. के (1994) 'शिक्षा की दार्शनिक प्रष्ठभूमि' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7.डॉ. मोहन लाल मेहता (1996). जैन धर्म दर्शन (एक समीक्षात्मक परिचय), सेठ मूथा छगनमल मेमोरियल फाउण्डेशन, बैंगलोर।
8.बुच, एम. बी. (1998). फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्चेज इन एजुकेशन, वॉल्यूम –2, 2/20 नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी.।
9.शास्त्री, प. कैलाश चन्द्र जी (1998). जैन धर्म, प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फर नगर।
10.आचार्य, उमा स्वाती (1998). 'तत्त्वार्थ सूत्र' जैन स्टडी सक्रिल, मुम्बई।
11.युवाचार्य (2000). 'जैन धर्म' अर्हत और अर्हताऐ'' जैन स्टडी सर्किल मुम्बई।
12.Begum S.M. (2000). Human Right in India Issue and perspectives New Delhi & Publishing Corporation.
13.जैन, डॉ हीरालाल (2001). रचना और पुर्नरचनाए प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फर नगर।
14.राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग रिपोर्ट (2001)।
15.पाण्डेय, रामशक्ल (2001). 'नई शिक्षा नीति' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
16.पाठक एवं त्यागी, (2002). 'शिक्षा के सिद्धान्त' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
17.चौपड़ा, पी. एन. (2002). भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास' दी मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली।
18.सखाराम दोशी (2003). भगवती आराधना सूत्र, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण, शोलापुर, महाराष्ट्र।
19.National Human Right Commission Report 2004
20.सिंह, आदित्य नारायण (2004). मानव अधिकार स्त्रोत ग्रन्थ, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली
21.ऊमा स्वाती विवेचक पं. सुत्रालाल संघवी (2005). तत्त्वार्थ सूत्र, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
22.सारस्वत, अक्षेन्द्र नाथ (2006). ''सामाजिक न्याय मानवाधिकार और पुलिस'', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
23.कबीर हुमायूँ (2007). भारतीय शिक्षा दर्शन, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली
24.श्री कृष्ण दत्त भट्ट (2007), जैन धर्म क्या कहता है ? सर्वसेवा संघ, वाराणसी।
25.सक्सेना, एन. आर. स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (2007) आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
26.शर्मा, आर. ए. (2008). मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ।